INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

सत्यमेव जयते
BPSC

LATEST EDITION

HINDI MEDIUM

Golden Edition

HANDWRITTEN NOTES

BPSC

(प्रारंभिक परीक्षा हेतु)

ACHIEVE YOUR DREAM THROUGH SELF STUDY WITH INFUSION NOTES

BASED ON NEW EXAM PATTERN

PART-1 भारत और बिहार का इतिहास

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

BPSC

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग –1

भारत और बिहार का इतिहास

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "***BPSC (Bihar Public Service Commission) (प्रारंभिक परीक्षा हेतु)"** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* **बिहार लोक सेवा आयोग (RPSC)** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "***संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/y7qfk6

Online Order करें - https://bit.ly/449w0Ms

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

भारत का इतिहास

क्र.सं.	अध्याय	पेज.नं.
1.	हड़प्पा सभ्यता (सिन्धु घाटी सभ्यता) • भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल	1-8
2.	वैदिक काल साहित्यिक स्त्रोत	9-16
3.	धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • शैव धर्म • धर्म दर्शन	17-36
4.	प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंश • मौर्य वंश एवं मौर्योत्तर काल • कुषाण वंश • सातवाहन राजवंश • गुप्त वंश एवं गुप्तोत्तर काल • चालुक्य वंश • पल्लव राजवंश • चोल राजवंश	37-68
5.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु • मूर्ति-कला • चित्रकला	69-103

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	• काव्यग्रंथ और नाटक • लोककला शैलियाँ • भारतीय चित्रकला • भारतीय नृत्य कलाएं	
5.	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास • साहित्य • संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल • प्रमुख साहित्यिक रचनायें	104-122
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरब आक्रमण	123-126
2.	दिल्ली सल्तनत काल • गुलाम वंश • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैयद वंश • लोदी वंश • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	127-144
3.	मुग़ल काल • बाबर से औरंगजेब तक	145-150
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु	152-160
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन	162-167

	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • पुर्तगाल, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी, स्वीडिश • मराठा साम्राज्य	169-185
2.	भारत में गवर्नर, गवर्नर जनरल वायसराय एवं उनके कार्य	186-193
3.	राष्ट्रवाद का उदय • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 ई. की क्रांति • भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • प्रेस (भारत में पत्रकारिता का विकास) • 19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन : विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ	195-221
4.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • कांग्रेस की स्थापना • उदारवादी आंदोलन • स्वदेशी आंदोलन • क्रांतिकारी आंदोलन • गाँधीवाद • महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान	222-283
5.	आज़ादी के बाद देश का एकीकरण और पुनर्गठन • देशी रियासतों का एकीकरण (Integration of Princely States)	283-302

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	• राज्यों का भाषायी पुनर्गठन • नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास	
	बिहार का इतिहास	
1.	बिहार : एक परिचय	303-303
2.	प्राचीनकालीन बिहार • बिहार के इतिहास के अध्ययन संबंधी स्रोत • बिहार का आर्यीकरण और राज्य का निर्माण • मगध साम्राज्य का उत्कर्ष • हर्यक वंश • नन्द वंश • मौर्य साम्राज्य • शुंग वंश • कण्व वंश • गुप्तकाल	304-322
3.	पूर्व मध्यकालीन बिहार • पाल कालीन बिहार • मिथिला में स्वतंत्र सत्ता का उदय • बिहार में तुर्क शासन • बिहार पर अफगान प्रभुत्व • सूरवंश • मुगल साम्राज्य • बंगाल के नवाब और बिहार • जनजातीय का उदय	322-339

	• बिहार में यूरोपीय व्यापारी वर्ग का प्रादुर्भाव	
4.	आधुनिक बिहार • ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह : • बक्सर युद्ध • बहावी आन्दोलन • जनजातीय विद्रोह • 1857 के विद्रोह में बिहार का योगदान • बिहार और राष्ट्रीय आन्दोलन • बिहार सोशलिष्ट पार्टी • अन्य संगठन • द्वैध तथा संवैधानिक प्रगति • स्वतंत्रता का उदय	339-380

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

वैदिक काल

वैदिक काल को **दो भागों में बांटा** गया है -
(1) ऋग्वैदिक काल (1500-1000ई.पू
(2)उत्तरवैदिक काल (1000-600ई.पू.)

वैदिक साहित्य : एक दृष्टि में

ऋग्वेद- यह **सबसे प्राचीन वेद** है। इसमें अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण आदि देवताओं की स्तुतियाँ संग्रहीत हैं।

सामवेद - ऋग्वैदिक श्लोकों को गाने के लिए चुनकर धुनों में बाँटा गया और इसी पुनर्विन्यस्त संकलन का नाम 'सामवेद' पड़ा। इसमें दी गई ऋचाएँ उपासना एवं धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर **स्पष्ट तथा लयबद्ध रूप से गाई** जाती थीं।

यजुर्वेद - इसमें ऋचाओं के साथ-साथ गाते समय किये जाने वाले अनुष्ठानों का भी पद्य एवं गद्य दोनों में वर्णन है।

यह वेद **यज्ञ-संबंधी अनुष्ठानों पर** प्रकाश डालता है।

अथर्ववेद - यह वेद जनसामान्य की सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को जानने के लिए इस काल का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें लोक परम्पराओं, धार्मिक विचार, विपत्तियों और व्याधियों के निवारण संबंधी **तंत्र-मंत्र** संग्रहित हैं।

गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद से संबंधित है।

वेदत्रयी - ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद

संहिता - चारों वेदों का सम्मिलित रूप

उपनिषद् - **108** (प्रामाणिक 12)

पुराण - 18

वेदांग - **शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त** (भाषा विगत), **छंद और ज्योतिष**

- इस काल में समाज का स्पष्ट विभाजन चार वर्णों- ब्राह्मण, क्षत्रिय (राजन्य), वैश्य और शूद्र में हो गया।
- इस काल में **यज्ञ** (Yajna) का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया, जिससे **ब्राह्मणों की शक्ति** में अपार **वृद्धि** हुई।
- इस काल में **वर्ण व्यवस्था** का आधार कर्म-आधारित (Profession-Based) न होकर **जन्म-आधारित** (Birth- Based) हो गया तथा वर्णों में कठोरता आने लगी।
- समाज में अनेक धार्मिक श्रेणियों (Religious Categories) का उदय हुआ, जो कि कठोर होकर विभिन्न जातियों (Castes) में बदलने लगी। अब व्यवसाय आनुवंशिक (Patrimonial) होने लगे।
- इस काल में समाज में अस्पृश्यता (Untouchability) की भावना का उदय नहीं हुआ था।

ऋग्वेद

- **आर्य जाति की प्राचीनतम रचना**
- रचना **पंजाब में**
- इसमें **10 भाग (मण्डल)** है। **1028 सूक्त, 10580 श्लोक** है।
- ऋग्वेद **मन्त्रों का एक संकलन** है जिन्हे यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिए गाया जाता है।
- **होर्त / होत्र** - ऋग्वेद के मंत्र पढ़ने वाला
- **ऋचा**-ऋग्वेद के मंत्र
- ऋग्वेद का पहला और दसवां मण्डल सबसे नवीनतम है (बाद में जोड़े गये)
- तीसरे मण्डल में **देवी सूक्त** मिलता है। इसमें **गायत्री मंत्र** का उल्लेख है जो सावित्री को समर्पित है।
- तीसरे मण्डल की रचना **विश्वामित्र** ने की।
- सातवें मण्डल में **दसराज्ञ युद्ध** का विवरण मिलता है।

दशराज्ञयुद्→

- **रावी नदी** (परुषणी नदी)के तट पर लड़ा गया।

त्रित्सु वंश एवं दस राजा के मध्य

- भरत वंश (त्रित्सु वंश) के सुदास ने विश्वामित्र को पुरोहित पद से हटाकर वशिष्ठ को नियुक्त कर दिया।
- विश्वामित्र ने दस राजाओं का संघ बना लिया (प्रतिशोध) युद्ध किया ।
- **ऋग्वेद में 1028 सूक्त है।**

↓

1017+ 11 (परिशिष्ट) 1028
सूक्त

▪ **सामवेद**

- साम का मतलब संगीत या गान
- यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मन्त्रों का संग्रह
- **संगीत का प्राचीनतम स्त्रोतः** भारतीय संगीत का जनक
- **मंत्र सूर्य देवता को समर्पित**
- **उद्गाता-** मन्त्रों को गाने वाला व्यक्ति

यजुर्वेद

- यज्ञों के नियम एवं विधि विधानों का संकलन [गद्य और पद्य दोनों में]
- ▪ अन्य तीनों वेद पद्य में है।
- इसे **गति या कर्म का वेद** भी कहा जाता है।
- **अध्वर्य- मंत्र पढ़ने वाले को अध्वर्य** कहते हैं।
- शून्य का उल्लेख मिलता है।

अथर्ववेद

- इसे **ब्रह्मवेद या श्रेष्ठ वेद** भी कहा जाता है।
- अथर्वा ऋषि का ज्ञान ही अथर्ववेद है।
- इसमें जादू, टोने-टोटके, अंधविश्वास व चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।

ब्राह्मण साहित्य

- ब्राह्मण ग्रंथों की रचना संहिताओं की व्याख्या करने के लिए गद्य में लिखे गये है।
- ये मुख्यतः दार्शनिक ग्रंथ हैं ।

ऋग्वेद - ऐतरेय ब्राह्मण
कोषीतकी
यजुर्वेद- शतपथ ब्राह्मण
तेतरेय ब्राह्मण
सामवेद- पंचवीश ब्राह्मण
षडवीश ब्राह्मण
जैमिनीय ब्राह्मण
अथर्ववेद- गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य

- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप में वनों (जंगलों) में लिखे गये।

उपनिषद्

- भारतीय दार्शनिक विचारों का प्राचीनतम संग्रह है।
- भारतीय दर्शन का स्त्रोत अथवा पिता
- उपनिषदों की कुल संख्या 108
- **सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।**

वेदांग

वेदों को भली-भांति समझने के लिए छः वेदांगो की रचना की गई ।

शिक्षा
ज्योतिष
कल्प वेदों के शुद्ध उच्चारण में सहायक
व्याकरण
निरुक्त
छन्द

पुराण

- ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रक्षवा ने संकलित किया ।
- इनकी संख्या 18 है।
- मत्स्य पुराण - सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण - गुप्त वंश का उल्लेख

सूत्र साहित्य

- वैदिक साहित्य को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए सूत्र साहित्य का प्रणयन ।

स्मृति

- ये न्याय ग्रंथ तथा समाज के संचालन से सम्बन्धित हैं।

मनुस्मृति

- शुंगकाल के दौरान लिखित
- प्राचीनतम स्मृति

वैदिक काल

ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू)	उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई.पू)

ऋग्वैदिक काल

ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक सभ्यता का **विस्तार 1500 ई.पू. से 1000 ई. पू.** तक माना जाता है।

आर्यों का भौगोलिक विस्तार

- आर्य सबसे पहले सप्त सैंधव प्रदेश में आकर बसे।
- इस प्रदेश में बहने वाली सात नदियों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

- ऋग्वेद के 9 वें मण्डल में कहा गया है कि मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैध है तथा मेरी मां अन्न पीसने वाली हैं।
- महिलाओं को विदाई के समय जो धन उपहार दिया जाता था उसे **वहतु** कहा जाता था।
- महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रो की रचना भी की।
- **विदुषी महिलाएँ-**

शची, पौलोमी, कांक्षावृत्ति, घोंशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, विशपला, मुद्गलानी

- लोपामुद्रा अगस्त ऋषि की पत्नी थी।
- आर्य मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे।
- गाय विनिमय का माध्यम

  अध्या शब्द का प्रयोग (गाय के लिए)

आर्थिक जीवन

- संस्कृति ग्रामीण
- घोड़ा प्रिय पशु

  दधिका - एक देवी अश्व
- कृषि योग्य भूमि उर्वरा अथवा क्षेत्र कहलाती थी।
- सीता या कुण्ड हल से जुती भूमि
- करीब, गोबर की खाद
- व्यापार-वाणिज्य प्रधानतः पणि वर्ग के लोग करते थे।
- पणि का अर्थ व्यापारी
- निष्क- विनिमय का माध्यम

  निष्क पहले आभूषण था बाद में सिक्के के रूप में प्रयोग किया जाने लगा।
- कुलाल - मिट्टी के बर्तन बनाने वाला

धर्म और धार्मिक विश्वासन

- आर्यों का सबसे प्राचीन देवता द्यौस
- द्यौस आर्यों के पिता
- ऋग्वैदिक काल में सबसे महत्त्वपूर्ण देवता इन्द्र था।
- ऋग्वेद में $\frac{1}{4}$ या 250 सूक्त इन्द्र को समर्पित
- इन्द्र युद्ध का देवता था।

ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लिखित शासन-प्रणालियाँ

पूर्व	साम्राज्य	सम्राट
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट
उत्तर	वैराज्य	विराट
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्यदेश	राज्य	राजा

प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रतिपादक (Philosophies and their Expounders)

दर्शन (Philosophy)	प्रतिपादक (Expounder)
चार्वाक (भौतिकवाद)	चार्वाक
सांख्य	कपिल
योग	पतंजलि
न्याय	गौतम
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तरमीमांसा	बादरायण
वैशेषिक	कणाद या उलूक

उत्तर वैदिक काल

- इस काल का समय 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक माना जाता है।
- इस काल का इतिहास ऋग्वेद के आधार पर विकसित साहित्यों से पता चलता है।

  ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
- अथर्ववेद में परीक्षित को मृत्युलोक का देवता कहा गया है।
- राज्य के उच्च अधिकारी रत्नी
- विभाग के अध्यक्ष
- सेनानी - सेनापति ।

  सूत - रथसेना का नायक

  ग्रामणी- गांव का मुखिया

  संग्रहीता - कोषाध्यक्ष

  भागधुक - अर्थमंत्री
- शतपति संभवत 100 ग्रामों के समूह का अधिकारी होता था।
- श्रष्टिन- प्रधान व्यापारी
- माप की इकाईयां
- निस्म्क, शतमान, पाद, कृष्णल
- बाट की मूल इकाई
- समाज चार वर्गों में विभक्त

  ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

उत्तर वैदिक काल :-

- इस काल में तीनो वेदों सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के अतिरिक्त ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद और वेदांगो की रचना हुई। ये सभी ग्रंथ उत्तर वैदिक काल के साहित्यिक स्त्रोत माने जाते हैं ।

प्रारंभिक परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की पुरातात्विक खुदाई के प्रभारी कौन थे ?

A. लॉर्ड मैकाले B. सर जॉन मार्शल

C. क्लाइव D. कर्नल जेम्स टॉड

उत्तर – B

प्रश्न-2. सिंधु घाटी सभ्यता के किस स्थान की सर्वप्रथम खुदाई की गई?

A. मोहनजोदड़ो B. कालीबंगा

C. हड़प्पा D. लोथल

उत्तर – C

प्रश्न-3. वह सील जिस पर एक योगी की आकृति बनी हुई है, जो पशुपति शिव जैसी दिखाई देती है मिली है?

A. मोहनजोदड़ो B. हड़प्पा

C. लोथल D. कालीबंगा

उत्तर – A

प्रश्न-4. सर्वप्रथम मानव ने निम्न किस धातु का उपयोग किया?

A. सोना B. चाँदी

B. तांबा D. लोहा

उत्तर – C

प्रश्न-5. किस हड़प्पा स्थल से एक साथ दो फसलें उगाई जाने के साक्ष्य मिलते हैं?

A. हड़प्पा B. रोपड़

C. बणावली D. कालीबंगा

उत्तर – D

प्रश्न-6. 'यज्ञ' संबंधी विधि विधानों का पता चलता हैं?

A. ऋग्वेद से B. सामवेद से

C. ब्राह्मण ग्रंथों से D. यजुर्वेद से

उत्तर – D

प्रश्न-7. प्रजापति की पुत्रियों के नाम हैं?

A. ऊषा व अदिति B. सभा व समिति

C. घोषा व अपाला D. उमा व सरस्वती

उत्तर – B

प्रश्न-8. ऋग्वेद में आर्य शब्द किसका वाचक हैं?

A. जाति B. धर्म

C. व्यवसाय D. गुण

उत्तर – D

प्रश्न-9. चारों आश्रमों का उल्लेख किस उपनिषद् में हुआ हैं?

A. मुण्डकोपनिषद् B. छान्दोग्योपनिषद्

C. वृहदारण्यकोपनिषद् D. जाबालोपनिषद्

उत्तर – D

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 4

प्राचीन भारत के राजवंश

- **मौर्य वंश**
  राजनीतिक इतिहास
- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया ।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षम" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की ।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं ।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

- बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा **दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।**
- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।
- जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने **श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति** (संलेखना पद्धति) **द्वारा प्राण त्याग दिये।**
- **चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।**
- आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।
- **मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।**
- इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था ।

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था ।
- **इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।**
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था ।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को **सेंड्रोकोट्स** नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था ।

बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।

अशोक के बाद मौर्य राज्य

पश्चिमी क्षेत्र — पूर्वी क्षेत्र

राजधानी - उज्जैन — राजधानी - पाटलिपुत्र

- वृहद्रथ अन्तिम मौर्य शासक था।
- 185 ई.पू. में इसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने वृहद्रथ की हत्या कर दी। मौर्य साम्राज्य का पतन।

केंद्र

राजा - समस्त व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु

कार्यपालिका

विधानपालिका

न्यायपालिका

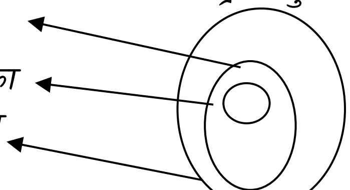

- **कौटिल्य के अनुसार राजा सप्तांग सिद्धांत का केन्द्र बिन्दु है।**

1. दुर्ग 2. अमात्य 3. मित्र 4. राजा 5. जनपद 6. कोष 7. सेना

- मेगस्थनीज के अनुसार राजा महिला अंगरक्षकों से घिरा होता है।
- राजा में दैवीय उत्पति का सिद्धांत लागू नहीं होता था। यद्यपि अशोक ने देवानाम प्रियदर्शी की उपाधि ली थी।
- राजा-प्रजा के मध्य पिता-पुत्र का संबंध होता था।
- कौटिल्य के अनुसार दिन को 8-8 घण्टों में विभक्त करना चाहिए जिसमें राजा को 16 घण्टे काम करना चाहिए।

नौकरशाही

नौकरशाही में 26 अध्यक्ष (विभागों के)

- वेतन 1000 पण
- द्वितीय श्रेणी अमात्य
- सीताध्यक्ष- राजकीय भूमि का स्वामी
- लक्षणाध्यक्ष- छापेखाने का अध्यक्ष

सौवर्णिक – टकसाल का प्रमुख

रुपदर्शक –सिक्के का जाँच अधिकारी

नगर प्रशासन

- विस्तृत विवरण इंडिका में
- नगर का प्रमुख नागरिक
- नगर प्रशासन के लिए 5-5 सदस्यों वाली समितियां (5x6 = 30 सदस्य)

प्रथम समिति - उद्योग-धन्धों का कार्य

द्वितीय समिति - विदेशियों की देखभाल

तृतीय समिति - जनसंख्या की गणना

चतुर्थ - व्यापार वाणिज्य को देखना

पंचम - बाजार व्यवस्था को देखना

षष्ठम् - बिक्री कर को देखना

राजस्व प्रशासन

- मौर्य सामान्य पहला केन्द्रीकृत शासन था।
- **चाणक्य के अर्थशास्त्र में 7 प्रकार के कर**

1. राष्ट्र कर - ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त
2. दुर्ग कर - नगर से समिति
3. वानि कर
4. खनि कर
5. ब्रज कर – पशुओं से सम्बंधित
6. सेतु कर - फल, फूल से सम्बंधित प्राप्त आय
7. वणिकपथ कर - स्थल जलमार्ग से सम्बंधित

प्रश्न - "पंकोदक सन्निरोधे" मौर्य प्रशासन द्वारा लिया जाने वाला जुर्माना था -

A. सड़क पर कीचड़ फेंकने पर

B. कूड़ा फेंकने पर

C. मंदिर को गंदा करने पर

D. पीने के पानी को गंदा करने पर

उत्तर - A

भूराजस्व कर

भूमि
- **राजकीय (सीता भूमि) - सीताकर**
- निजी भूमि पर $\frac{1}{6}$ या 16 वां हिस्सा कर के रूप में

- **प्रणय कर - संकटकालीन कर** ($\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{4}$) तक
- **विनीता कर - चारागाह पर**
- **उद्रंग कर – सिंचाई पर**

सैन्य प्रशासन

- चाणक्य ने **चतुरंगिनी सेना** (पैदल, हाथी, घुड़सवार, रथ) का उल्लेख किया।
- सैन्य प्रशासन में समितियां थी।
- **गुल्म छावनी को कहते थे।**
- गुल्मदेय- सैनिकों का वेतन
- सेना 3 प्रकार की - राजा की सेना (मोल सेना), किराये की सेना, नगरपालिका की सेना
- तीन प्रकार के युद्ध

प्रकाश युद्ध - आमने सामने (प्रत्यक्ष)कूट युद्ध

तुष्नि युद्ध - विष देकर राजा की हत्या

गुप्तचर प्रशासन

- **गुप्तचर को गूढ पुरुष कहा गया।**

- इसके सिक्कों पर शिव, स्कन्द तथा विष्णु की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।
- इसके बाद कनिष्क द्वितीय एवं वासुदेव शासक हुए। वासुदेव शैव था, जिसकी मुद्राओं पर शिव और बैल की आकृति उत्कीर्ण है।
- कुषाणों ने शुद्ध सोने के सिक्के (124 ग्रेन) जारी किये। इन्हें सर्वाधिक ताम्र सिक्के चलाने का श्रेय भी प्राप्त है।
- भारतीयों के लिए महान **सिल्क मार्ग कनिष्क ने आरम्भ किया था।** कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध का अंकन मिलता है।

• सातवाहन राजवंश

- 'सातवाहन' शब्द का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में है। इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ प्राप्त होती हैं। **कथा सरित्सागर में 'सात' नामक यक्ष पर चढ़ने वाले को सातवाहन कहा गया है।**
- अभिलेखों में वर्णित सातवाहनों और पुराणों में वर्णित आन्ध्रों को एक ही समझा जाता है।
- पुराण केवल आन्ध्र शासन का उल्लेख करते है। सातवाहन शासन का नहीं दूसरी ओर सातवाहन अभिलेखों में आन्ध्र का नाम तक नहीं मिलता
- कुछ पुराणों के अनुसार आन्ध्रों ने कुल मिलाकर 300 वर्षों तक शासन किया और यह वहीं समय है जिसे सातवाहन शासन का युग माना जाता है।
- **अशोक के शिलालेखों** से पता चलता है कि आन्ध्र प्रदेश और वहाँ के लोग उसके अधीन थे।
- कुछ आधुनिक विद्वानों की राय है कि सातवाहन वंश के राजा मूलतः महाराष्ट्र के रहने वाले थे।
- पठान या प्रतिष्ठान नामक स्थान उनकी राजधानी थी। उन्होंने शीघ्र ही आन्ध्र को भी जीत लिया और अपने साम्राज्य का अंग बना लिया। लेकिन शकों ने उनसे महाराष्ट्र का अधिकांश भाग छीन लिया और वे धीरे-धीरे आन्ध्र तक ही सीमित रह गये।
- अतः कालान्तर में उन्हें आन्ध्र कहा जाने लगा। कुछ विद्वानों की राय है कि सातवाहन मूलतः पश्चिम-दक्षिण वासी थे।
- सातवाहन वंश का प्राचीनतम अभिलेख दक्षिण-पश्चिम से प्राप्त हुआ, अतः यह मत भी ठीक हो सकता है कि वे प्रारम्भ में दक्षिण-पश्चिम में रहते हों तथा बाद में पूर्व की ओर बढ़ गये हों। अतः कालान्तर में उन्हें आन्ध्र कहा जाने लगा।

सातवाहन वंश के शासन का प्रारम्भ एवं साम्राज्य विस्तार

- पुराणों के अनुसार आन्ध्र कण्वों के भृत्य (नौकर) थे। सम्भवतः वे मगध के सम्राट कण्वों के सामन्त और अमात्य थे, वस्तुतः जिन शासकों का अभिलेखों में सातवाहन नाम से उल्लेख है।
- पुराणों में उन्हें **आन्ध्र भृत्य** कहा गया है। कुछ विद्वानों की राय है कि सातवाहन वंश के शासक पहले आन्ध्रवंशीय राजाओं के भृत्य थे।
- यहीं विद्वान मेगस्थनीज के विवरण का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आन्ध्रों को मौर्योत्तर काल का नहीं बल्कि मूलतः मौर्यों से पूर्व या समकालीन मानना उचित होगा।
- वे कहते है कि यूनानी यात्री मेगस्थनीज के अनुसार (जो स्वयं चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा) भारत मौर्यों के बाद उस समय सबसे बड़ी सेना आन्ध्रों की ही थी और उनके राज्य में तीस बड़े-बड़े नगर थे।
- इस समय आंध्रों की राजधानी श्रीकाकुलम थी। सम्भवतः चन्द्रगुप्त मौर्य या बिन्दुसार ने उन्हें पराजित किया क्योंकि बिन्दुसार के समय आन्ध्र निःसन्देह मगध का अंग बन चुका था।
- किन्तु अशोक के अयोग्य उत्तराधिकारियों के काल में वह फिर स्वतंत्र हो गया।
- वे पूर्व से पश्चिम की ओर आन्ध्र तक बढ़ते चले गये तथा महाराष्ट्र तक का क्षेत्र उनके अधिकार में आ गया।
- उनकी दूसरी राजधानी पैठान या प्रतिष्ठान (गोदारी के किनारे पैठन) बनी।
- इधर आने के बाद ही इन्हें सातवाहन (शात वाहन, सिंह है वाहन जिनका) कहलाने लगे।
- इसीलिए इतिहास ने इन्हें सुविधा के लिए आन्ध्र - सातवाहन भी कहा है।

आंध्र -सातवाहन वंश के शासक

शिमुक

- पुराणों के प्रमाण के अनुसार 28 ई.पू. शिमुक (या शिमुक या सिन्धुक) नामक आन्ध्र ने (जो सम्भवतः कण्व शक्ति का नायक या सेनापति था) ने कण्व

मालविकाग्निमित्रम्	**कालिदास**	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	**कालिदास**	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**कालिदास**	दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शाकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वैश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	**भास**	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भारत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

विष्णु शर्मा

- विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न भिन्न संस्करण निकल चुके हैं।
- **पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ 'बाइबिल' के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है।**
- 16 वीं शताब्दी के अंत तक इस ग्रंथ का अनुवाद यूनान, लैटिन, स्पेनिश, जर्मन एवं अंग्रेजी भाषाओं में किया जा चुका था।
- **पंचतत्र 5 भागों में बंटा है-**

1. मित्रभेद,
2. मित्रलाभ,
3. सन्धि-विग्रह,
4. लब्ध-प्रणाश,
5. अपरीक्षाकारित्व।

गुप्तकाल के धार्मिक ग्रंथ

पुराण

- पुराणों के वर्तमान रूप की रचना गुप्त काल में ही हुई, इनमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है। पुराणों का अंतिम रूप से संकलन भी गुप्त काल में हुआ है।
- दो महान गाथा काव्य रामायण और महाभारत ईसा की चौथी सदी (गुप्तकाल) में पूरे हो चुके थे। अतः इनका संकलन गुप्त युग में ही हुआ। 'रामायण' में परिवार रूपी संस्था का आदर्श रूप वर्णित है। 'महाभारत' में दुष्ट शक्ति पर इष्ट शक्ति की विजय दिखाई गई है।
- 'भगवतगीता' प्रतिफल की कामना के बिना कर्तव्य पालन के निर्देश देती है।

प्रश्न-8. तराइन का द्वितीय युद्ध कब हुआ?

A. 1191 ई.

B. 1192 ई.

C. 1193 ई.

D. 1194 ई.

उत्तर – B

प्रश्न-9. तराइन का प्रथम युद्ध कब हुआ था?

A. 1191 ई.

B. 1192 ई.

C. 1193 ई.

D. 1194 ई.

उत्तर - A

अध्याय – 2

दिल्ली सल्तनत काल

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे -

- 1. गुलाम वंश / मामलुक वंश (1206-1290)
- 2. खिलजी वंश (1290-1320)
- 3. तुगलक वंश (1320-1414)
- 4. सैयद वंश (1414-1451)
- 5. लोदी वंश (1451-1526)
- इनमें से चार वंश मूलतः तुर्क थे जबकि अंतिम वंश लोदी वंश अफगान था।

प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ

गुलाम वंश के शासक :-

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई. तक)

- **भारत में तुर्की राज्य / दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।**
- **1192 ई. के तराइन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।**
- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया **(खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे)**खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ में इंद्रप्रस्थ दिल्ली के पास को सैंथ्नक मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाजा (मुहम्मद गौरी के दास)के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई. में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है ।
- **कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित कुतुबमीनार का निर्माण प्रारम्भ**

करवाया। उसने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा मस्जिद का निर्माण करवाया।

- **कुरान के अध्यायों का सुरीले स्वर में उच्चारण करने के कारण ऐबक को कुरान खां** कहा जाता था। अपनी **उदारता के कारण इसको लाख बख्श कहा जाता था।**

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायूँ यू.पी. का इक्तेदार था।
- ऐबक की मृत्यु के बाद कुछ इतिहासकारों के अनुसार आरामशाह लाहौर में नया शासक बना, लेकिन दिल्ली के तुर्की अमीरों ने इल्तुतमिश को नया सुल्तान घोषित किया।
- **इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था।** इसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- **इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्कें टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था (1 टंका =48 जीतल)**
- **यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।**
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिए काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। **भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था।**
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।
- **1235 में ग्वालियर का अभियान** -इस अभियान के दौरान **इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।**
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है।

मृत्यु -

- बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग मे इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती गई। अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश प्रथम सुल्तान था, जिसने दोआब के आर्थिक महत्व को समझा था और उसमें सुधार किया था।

रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236)

- इल्तुतमिश एवं खुन्दाबन्दे जहांशाह तुर्का या शाहतुर्कान की सन्तान रुकनुद्दीन फिरोजशाह उसका दूसरा पुत्र था।
- यद्यपि इल्तुतमिश ने अपना उत्तराधिकारी रजिया को बनाया था परन्तु प्रान्तीय सूबेदारों एवं शाहतुर्कान ने षडयंत्र कर रुकनुद्दीन को शासक बनवा दिया। उसे शासक बनाने में मुख्य भूमिका प्रांतीय सूबेदारों की थी।
- शाहतुर्कान एक तुर्क दासी थी।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली महिला थी जिसने शासन को नियंत्रित करने का प्रयास किया।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

- सुल्ताना रजिया (उसका पुरा नाम जलॉलात उद-दिन-रजिया था) का जन्म 1205 ई. में बदायूँ में हुआ था, उसने उमदत - उल -निस्वाँ की उपाधि ग्रहण की।
- **रजिया ने पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरुषों के समान काबा चोगा पहनकर दरबार में कारवाई में हिस्सा लिया।**
- **दिल्ली की जनता ने उसे 'रजिया सुल्तान' मानकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया।**
- **वह दिल्ली सल्तनत की पहली एवं आखिरी मुस्लिम महिला शासिका थी।** 'सुल्तान रजियत

- उसको अपने आपको दूसरा अलेक्जेंडर बुलवाना अच्छा लगता था, उसे सिकन्दर-आई-सनी का ख़िताब दिया गया था। खिलजी ने अपने राज्य में शराब की खुले आम बिक्री बंद करवा दी थी।
- **वे पहले मुस्लिम शासक थे, जिन्होंने दक्षिण भारत में अपना साम्राज्य फैलाया था,** और जीत हासिल की थी।
- **खिलजी के साम्राज्य में उनके सबसे अधिक वफादार जनरल थे मलिक काफ़ूर** और खुश्रव खान।

मंगोल आक्रमण

- **दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण अलाउद्दीन खिलजी के काल में हुआ।**
- अधिकांश इतिहासकारों का मत है कि उसके काल में कुल 6 मंगोल आक्रमण हुए। उसके शासन काल में मंगोल खतरा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया था।
- अलाउद्दीन ने मंगोलों के प्रति रक्त एवं युद्ध पर आधारित अग्रगामी नीति का अनुसरण किया। ऐसा करने वाला पहला सुल्तान था। महत्त्वपूर्ण है कि इसी समय मंगोल शासक दवा खान ने अफगानिस्तान को रौंदने के बाद रावी नदी तक अपने शासन का विस्तार किया।
- सर्वप्रथम उसी ने दिल्ली विजय की नीति अपनायी और अपने पुत्रों को भारत पर आक्रमण करने हेतु भेजा। **मंगोलों की दिल्ली विजय की नीति 1306 ई. में दवा खान की मृत्यु के बाद ही खत्म हो पायी।**
- **सीरी को नयी राजधानी के रुप में विकसित किया। पहली बार दिल्ली के चारों ओर एक रक्षात्मक चार दीवारी बनायी गयी।**
- सीमान्त प्रदेश की रक्षा लिए एक पृथक सेना और एक सीमा रक्षक का पद लाया। इस पर पहली नियुक्ति गाजी मलिक (गियासुद्दीन तुगलक) की हुई। उसे 1305 ई. में पंजाब का सूबेदार बनाया गया। गाजी मलिक प्रतिवर्ष मंगोल क्षेत्रों पर आक्रमण करके उन्हें आतंकित करता था।

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-1320ई.)

- कुतुबुद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत के खिलजी वंश का शासक अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफ़ूर ने एक वसीयत नामा पेश किया, जिसमें अलाउद्दीन के पुत्रों (खिज्र खां, शल्दी खां, मुबारक खां) के स्थान पर खिज्र खां के नाबालिक पुत्र शिहाबुद्दीन उमर को सुल्तान बनाया गया।
- तुर्की सरदारों ने विद्रोह किया तथा मलिक काफ़ूर की हत्या कर मुबारक खिलजी को नाबालिक सुल्तान घोषित कर नायब-ए-ममलिकात बना दिया।
- मुबारक खिलजी ने शिहाबुद्दीन उमर की हत्या कर दी तथा **कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी नाम से सुल्तान बना। इसने स्वयं को खलीफा घोषित किया जो सल्तनत काल का ऐसा करने वाला एकमात्र शासक था।**
- **अलाउद्दीन खिलजी की कठोर दण्ड व्यवस्था एवं बाज़ार नियंत्रण आदि व्यवस्था को उसने समाप्त कर दिया था।**
- अप्रैल 1320 ई. को खुसरो ने सुल्तान की हत्या कर दी और नासिरुद्दीन खुसरो शाह के नाम से शासक बना।
- **नासिरुद्दीन खसरो शाह (अप्रैल-सितंबर 1320 ई.)**
- अप्रैल 1320 में खुसरो ने कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी की हत्या कर दी और नासिरुद्दीन खुसरो शाह के नाम से शासक बना। यह कुछ माह तक ही शासक रहा अप्रैल से सितंबर माह तक।
- नासिरुद्दीन खुसरो शाह ने **सूफी संत निजामुद्दीन औलिया** को धन वितरित किया।
- **गाजी मलिक जो दीपालपुर का इक्तेदार था के नेतृत्व में खुसरो शाह को मरवा दिया गया तथा तुगलक वंश की स्थापना की गई।**

तुगलक वंश (1320 से 1414 ई.)

संस्थापक –ग्यासुद्दीन तुगलक

अन्तिम शासक - नासिरुद्दीन महमूद

गाजी ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

उपाधि - अल-शहीद (मुहम्मद-बिन-तुगलक के सिक्कों पर ग्यासुद्दीन की यह उपाधि मिलती है।)

ग्यासुद्दीन तुगलक के समय हुये आक्रमण

- इसके समय 1323 ई. में पुत्र जौना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक)ने वारंगल पर आक्रमण किया लेकिन असफल रहा। इस समय वारंगल का शासक प्रताप रुद्रदेव था।
- **1324 ई. में जौना खाँ ने वारंगल पर पुनः आक्रमण किया इसे (वारंगल) जीतकर इसका नाम तेलंगाना/सुल्तानपुर रखा।**
- **1324 ई. में ग्यासुद्दीन ने बंगाल का अभियान किया** तथा नासिरुद्दीन को पराजित कर बंगाल के

को अंग्रेजों द्वारा खेल लिया गया तथा कोया लोगों पर ताड़ी के घरेलू उत्पादन पर कर लगा देना मुख्य कारण था।

- राजू रम्पा में कोया विद्रोह का कुछ समय तक नेतृत्व किया द्वितीय चरण में कोया विद्रोह का नेतृत्व अनंत शैय्यार ने किया अंग्रेजों ने कठोर सैन्य कार्यवाही द्वारा कोया विद्रोह को समाप्त कर दिया।

ताना भगत आंदोलन

- ताना भगत आंदोलन की शुरुआत वर्ष 1914 ई. में बिहार में हुई थी। **यह आंदोलन लगान की ऊँची दर तथा चौकीदारी कर के विरुद्ध किया गया** था।
- इस आंदोलन के प्रवर्तक 'जतरा भगत' थे, जिसे कभी बिरसा मुण्डा, कभी जमी तो कभी केसर बाबा के समतुल्य होने की बात कही गयी है।
- आंदोलन की शुरुआत 'मुण्डा आंदोलन' की समाप्ति के क़रीब 13 वर्ष बाद 'ताना भगत आंदोलन ' शुरू हुआ। **यह ऐसा धार्मिक आंदोलन था, जिसके राजनीतिक लक्ष्य थे।**
- यह आदिवासी जनता को संगठित करने के लिए नये 'पंथ' के निर्माण का आंदोलन था। ताना भगत आंदोलन में अहिंसा को संघर्ष के अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया।
- बिरसा आंदोलन के तहत झारखंड में ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ संघर्ष का ऐसा स्वरूप विकसित हुआ, जिसको क्षेत्रीयता की सीमा में बांधा नहीं जा सकता था।
- **इस आंदोलन ने संगठन का ढांचा और मूल रणनीति में क्षेत्रीयता से मुक्त रहकर ऐसा आकार ग्रहण किया कि वह महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जारी आज़ादी के 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ' का अविभाज्य अंग बन गया।**

पहाड़ियाँ विद्रोह

- 1770 के विद्रोह के दसक में राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश भू- राजस्व व्यवस्था के विरोध में पहाड़िया विद्रोह हुआ।
- **आदिवासियों के छापामार सघंर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने सन् 1778 में इनसे समझौता कर इनके क्षेत्र को दामिनी कोह क्षेत्र घोषित कर दिया।**

बस्तर का विद्रोह

- **सन् 1910 में बस्तर के राजा के विरुद्ध जगदलपुर क्षेत्र में विद्रोह हुआ।** जिसका दमन ब्रिटिश सेना ने किया।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण वन अधिनियमों का क्रियान्वयन और सामन्ती करों का करारोपण था।**

1857 ई. की क्रांति

- **कारण एवं परिणाम**
- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है। तो कुछ ने इसे दो धर्मों अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्त्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्त्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे।

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया। धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये।**

- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) <u>डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-</u>

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया ।** जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया ।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया । उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली ।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना । सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना । आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी ।

(2) <u>मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार</u> :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया । उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया ।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा।**

(3) <u>ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य</u>-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के संबंध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे ।

(4) <u>नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असंतोष</u> :-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था ।**
- इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रांति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया ।

(5) <u>अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार</u>:-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था ।
- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था । इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असंतोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) <u>प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस</u> :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरुप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी ।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये ।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये ।

(7) <u>अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना</u> :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं । तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी ।

- ब्रिटिश जज भी अंग्रेजों के प्रति पक्षपात करते थे। इसलिए, अंग्रेजों के अपमानजनक दुर्व्यवहार के विरुद्ध भारतीय न्याय भी नहीं पा सकते थे।
- समय के साथ-साथ अंग्रेजों के व्यक्तिगत अत्याचार की घटनाएं कम होने के बजाय बढ़ती जा रही थी। ये घटनाएं भारतीयों में असंतोष का एक मुख्य कारण थी।

धार्मिक कारण

- कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों ने अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई धर्म के प्रचार का भागीरथ प्रसार किया।
- जिससे भारतीय जनता विशेषकर सैनिकों में आतंक छा गया। अंग्रेजों द्वारा भारतीय धर्म में हस्तक्षेप के निम्नलिखित प्रयास किये गए –

(1) ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रसार की स्वीकृति देना :-

- **1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा अंग्रेजी सरकार ने ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रचार की स्वीकृति प्रदान कर दी थी।**
- उसके बाद ईसाई पादरी बड़ी संख्याओं में भारत आने लगे। उनका एक मात्र लक्ष्य भारत में ईसाई धर्म का प्रसार था। शुरू में अंग्रेज शासकों ने पादरियों को धर्म-प्रचार में कोई सहायता देना पसंद नहीं किया।
- लेकिन बाद में शासक वर्ग द्वारा ईसाई धर्म प्रचारकों को आर्थिक सहायता, राजकीय संरक्षण तथा प्रोत्साहन दिया जाने लगा। इस कारण हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही अपने-अपने धर्म के लिए खतरा महसूस हुआ।

(2) मिशनरियों की उद्दण्डता :-

- ईसाई धर्मोपदेशक बडे अहंकारी तथा उद्दण्ड होते थे। वे भारतीयों के सामने खुले रूप से इस्लाम तथा हिन्दू धर्मों की निन्दा किया करते थे और उनके महापुरुषों, अवतारों और पैगम्बरों को गालियां दिया करते थे।
- ऐसी स्थिति में हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों को शंका होने लगी और वे अंग्रेजों से घृणा करने लगे।

(3) शिक्षण संस्थाओं द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार :-

- धर्म के लिए सबसे बड़ा खतरा ईसाई पादरियों द्वारा संचालित स्कूलों से हुआ। **इन स्कूलों का उद्देश्य भारतीयों को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ, ईसाई धर्म का प्रचार करना भी था।**
- इन स्कूलों में हिन्दू बच्चों से ईसाई धर्म के संबंध में प्रश्न पूछे जाते थे। इससे उच्च वर्ग के भारतीयों की यह धारणा हो गई कि यदि उनके पुत्र नहीं तो उनके पौत्र तो निश्चय ही ईसाई बन जायेंगे।
- इसके विपरीत **सरकारी स्कूलों में हिन्दू अपने धर्म की शिक्षा नहीं दे सकते थे क्योंकि राज्य अपने को धर्म-निरपेक्ष बतलाता था।** राज्य की इस दोहरी नीति से भारतीयों में बड़ा असंतोष फैला।

(4) ईसाई बनने वालों को सुविधाएं देना :-

- ईसाई धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रलोभन दिए जाते थे। जो हिन्दू अथवा मुसलमान ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते थे उन्हें सरकार अनेक प्रकार से सहायता देती थी और सरकारी नौकरियां देकर अन्य लोगों को भी ईसाई बनाने के लिए प्रोत्साहित करती थी।
- अपराधियों को अपराध से बरी कर दिया जाता था, यदि वे ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते थे। लॉर्ड कैनिंग ने तो ईसाई धर्म के प्रचार के लिए लाखों रुपये दिए। इससे लोग स्वेच्छा से ईसाई बनने लगे। फलतः लोगों में असंतोष बढ़ता गया।

(5) सम्पत्ति संबंधी उत्तराधिकार के नियम में परिवर्तन :-

- 1856 ई. में जो पैतृक सम्पत्ति-संबंधी कानून बनाया गया उसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि धर्म परिवर्तन करने पर किसी व्यक्ति को उसकी पैतृक सम्पत्ति से वंचित नही किया जायेगा। उसे भी भारतीयों ने ईसाई धर्म को प्रोत्साहित करने का साधन समझा।

(6) गोद-प्रथा का निषेध :- डलहौजी ने हिन्दुओं को पुत्र गोद लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। लेकिन **हिन्दू धर्म शासन के अनुसार परलोक में शांति प्राप्त करने के लिए निःसन्तान व्यक्ति के लिए पुत्र को गोद लेना बहुत जरूरी समझा जाता था। अतएवः डलहौजी की इस नीति से भारतीयों में बड़ा असंतोष फैला।**

(7) जेलों में ईसाई धर्म का प्रसार :-

- अंग्रेजों ने स्कूलों के साथ-साथ जेलों को भी ईसाई धर्म प्रसार का साधन बनाया था। जेल में प्रतिदिन सुबह एक ईसाई अध्यापक ईसाई धर्म की शिक्षा देता था। 1845 ई. में एक नये नियम के अन्तर्गत जेल में सभी कैदियों का भोजन एक ब्राह्मण व्यक्ति

के द्वारा सामूहिक रूप से बनाया जाना शुरू किया गया।

- उस समय प्रत्येक कैदी अपना भोजन स्वयं बनाता था। इस नये नियम से प्रत्येक कैदी को अपनी जाति खो देने का डर लगा क्योंकि अन्तर्जातीय खान-पान को हिन्दू स्वीकार नहीं करते थे। जेल से छूटे हुए व्यक्ति को हिन्दू परिवार में शामिल नहीं करते थे।

तात्कालिक कारण

- उपरोक्त विवरण से प्रकट होता है कि भारतीय सैनिक न केवल उन सभी बातों से असन्तुष्ट थे जिनसे भारतीय नागरिक असन्तुष्ट थे बल्कि उनके असंतोष के कुछ अलग कारण भी थे।
- अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना सैनिकों में आ चुकी थी उसे केवल एक चिंगारी की जरूरत थी और वह चिंगारी चर्बी लगे हुए कारतूसों ने प्रदान कर दी।
- **1856 ई. में भारत सरकार ने पुरानी बन्दूकों को हटाकर नई 'एनफील्ड राइफल' को सेना में प्रयोग करना चाहा। उसके लिए जो कारतूस बनाये गये थे उन्हें बन्दूक में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था। इन राइफलों के कारतूसों को चिकना बनाने में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था।** यद्यपि अंग्रेज अधिकारियों ने इस बात को नहीं माना लेकिन सैनिकों को उन पर विश्वास नहीं हुआ।
- यह भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाओं की सूर अवहेलना थी। उन्हें यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज हिन्दू और मुसलमान दोनों का ही धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं। अतः उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने के बजाय ऐसे दूषित शासन का अन्त कर देना ही उचित समझा।
- इस प्रकार, **कारतूसों की घटना 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी।** सैनिकों की सफलता ने भारतीय नागरिकों को भी विद्रोह करने के लिए तैयार कर दिया।

विद्रोह का प्रारम्भ एवं प्रसार

- **सर्वप्रथम क्रांति की शुरुआत कलकत्ता के पास बैरकपुर छावनी में हुई।** यहाँ के सैनिकों ने नए कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर विद्रोह का झण्डा खडा कर दिया।
- **29 मार्च, 1857 ई. को एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की आज्ञा से नाराज होकर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कुछ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को मार डाला।**
- परिणाम स्वरूप मंगल पाण्डे तथा उसके सहयोगियों को फांसी की सजा दे दी गई। उसके बाद 19 तथा 34 नम्बर की देशी पलटने समाप्त कर दी गई। बैरकपुर की छावनी की घटना के बाद मेरठ में भी विद्रोह शुरू हो गया।
- सैनिकों ने कारागह से बन्दी सैनिकों को मुक्त करा लिया तथा कई अंग्रेजों का वध कर दिया गया। मेरठ से यह क्रांतिकारी दिल्ली की ओर रवाना हुए।

दिल्ली

- 11 मई 1857 ई. को मेरठ के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे उस समय दिल्ली में कोई अंग्रेज पलटन नहीं थी। विद्रोहियों का दिल्ली के भारतीय सैनिकों ने स्वागत किया और वे भीड़ के साथ शामिल हो गये। जैसे ही उन्होंने अपने सभी अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी।
- **विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बहादुर शाह द्वितीय को नेतृत्व स्वीकार करने की अपील की।** मुग़ल बादशाह ने संकोच किया तथा मेरठ के विद्रोह और विद्रोहियों के दिल्ली पहुँचने की सूचना आगरा में लेफ्टिनेंट गवर्नर को भिजवाई।
- लेकिन अंत मे विवश होकर उन्होंने क्रांतिकारियों का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया। अंग्रेज दिल्ली से भाग गये और दिल्ली पर मुग़ल सम्राट बहादुर शाह की पताका फहराने लगी।
- मुग़ल शहजादों मिर्जा मुग़ल, मिर्जा खिजिर, सुल्तान और मिर्जा अबूबकर ने संयोग से प्राप्त इस अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाया।
- उन्हें लगा कि यह उनके वंश के पुराने गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का मौका है। मेरठ में विद्रोह और दिल्ली पर अधिकार की खबर पूरे देश में फैल गई और कुछ ही दिनों में उत्तर भारत के अधिकांश भागों में क्रांति का प्रसार हो गया।

अवध

- **मेरठ** की घटनाओं की सूचना 14 मई को और दिल्ली पर क्रांतिकारियों के अधिकार की खबर 15 मई को लखनऊ पहुँची। उस समय सर **हेनरी लॉरेंस वहां का चीफ कमिश्नर था।**

अध्याय – 2

प्राचीनकालीन बिहार

प्रागैतिहासिक बिहार

बिहार का इतिहास अति प्राचीन है। यहाँ दक्षिणी भाग में स्थित पर्वतीय इलाकों में आदि मानव के निवास के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इसकी पुष्टि पुरातात्विक खोजों और खुदाई से प्राप्त लगभग एक लाख वर्ष पुरानी ऐतिहासिक सामग्रियों से होती है। ऐसे सबसे प्राचीन अवशेष **पूर्वपाषाण काल** के हैं जो अनुमानतः 1 लाख ई. पू. के काल के हैं। पुरापाषाणकालीन संस्कृति के उद्भव और विकास का आरम्भिक प्रमाण दक्षिण बिहार के छोटानागपुर के पठार में प्राप्त हुए हैं। पहली बार पुरापाषाणकालीन उपकरण बी. बॉल और हुगल को 1865 ई. में धनबाद जिला में स्थित कुनकुने गाँव में मिले थे। यहाँ पत्थर की कुल्हाड़ी और चाकू मिले थे । इस समय से अब तक छोटा नागपुर के पठार के साथ-साथ नालन्दा, गया, मुंगेर और भागलपुर जिला के अनेक स्थानों पर निम्न मध्य और उच्च पुरापाषाणकाल तथा मध्य पुरा-पाषाणकाल के अवशेष मिले हैं। ये सभी स्थल जंगल से आच्छादित पर्वत शिखरों पर थे। उत्तर बिहार के वाल्मीकि नगर में भी कुछ पुरापाषाणकाल के उपकरण मिले हैं। इन उपकरणों में आशुलियन प्रकार की हाथ की कुल्हाड़ियों, काटने वाले अस्क, स्क्रेपर और फलक, फलक झुड़िया, अर्द्ध चान्द्रिक, उत्कीर्णक, छुरी और खुरचनी आदि प्रमुख हैं। इस काल में स्थायी बस्तियों की स्थापना नहीं हुई थी। आवास के रूप में पहाड़ की चट्टान अथवा गुफाओं का सहारा लिया जाता था। गया जिले के शेरघाटी में ऐसे दो चट्टानी शरण स्थल प्रकाश में आये हैं।

नवपाषाण काल में मानव पठारी इलाकों को छोड़कर मैदानी इलाकों में बसने लगा। बिहार में विकसित नव-पाषाणिक बस्तियाँ चिरांद, चेचर, ताराडीह, मनेर और सेनुआर में पायी गयी हैं। इन स्थलों से पत्थरों के अत्यन्त सूक्ष्म औजार प्राप्त हुए हैं। छपरा से 11 किमी. दक्षिण पूर्व में घाघरा नदी के किनारे स्थित चिरांद में हड्डियों से बने उपकरण भी मिले हैं। नवपाषाणकाल में मानव ने झोपड़ी में रहना शुरू किया। इसी काल में भौतिक जीवन के उन मूल तत्त्वों की स्थापना हुई जिनका कालान्तर में विकास हुआ और जिन्होंने बाद की ताम्र-पाषाणकालीन संस्कृति के उदय का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

नवपाषाण युग के अंत तक धातुओं का उपयोग शुरू हो चुका था। धातुओं में शुरुआत में ताम्बा का प्रयोग शुरू हुआ। बिहार के सोनपुर, ताराडीह, मनेर, सेनुआर, माँझी, चिरोद चेयर तथा अस्थिय में ताम्रपाषाणिक संस्कृति के अवशेष मिले हैं। इन ताम्रपाषाणिक स्थलों में से ताराडीह, मनेर, सेनुआर, चिरोद और चेचर में नवपाषाणिक स्तर के बाद इसी क्रम में ताम्रपाषाणिक संस्कृति के अवशेष पाये गये हैं। माँझी, अरियप और सोनपुर से ताम्रपाषाणिक स्तर से ही आबादी का पहला प्रमाण मिला है । इन स्थलों से मत्स्य भाले, तलवार, मानवतारोपी आकृति आदि मिले हैं। इनका उपयोग शिकार, लड़ाई, शिल्प एवं कृषि कार्य के लिए होता था। यहाँ से काले एवं लाल मृद्भांड, पूर्वी उत्तरी वाले चमकीले मृद्भांड एवं काले तथा लाल रंग वाले चित्रित मृद्भांड मिले हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल के मानव ने एक ही स्थान पर अधिक समय व्यतीत करने की बजाय विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रसार करना प्रारम्भ कर दिया था।

ताम्रपाषाण संस्कृति के बाद लौहयुगीन संस्कृति की शुरुआत हुई। बिहार के भौतिक जीवन के विकास में लौह तकनीक के विकास ने एक नये अध्याय की शुरुआत की। लोहे के व्यवहार का पहला साक्ष्य चिरौंद और ताराडोह में मिला है। लौह युग में बस्तियों की घेरेबन्दी की शुरुआत हुई तथा बस्तियों के अन्दर नागरिक सुविधाओं की व्यवस्था की जाने लगी। इसी काल में कृषि का विस्तार हुआ और शिल्प व उद्योग पूर्व की अपेक्षा अधिक विकसित हुए। अब गाँव ने कस्बों व नगरों का रूप लेना शुरू किया। इस प्रकार लौह युग में बिहार में नगरीकरण के लक्षण प्रकट होने आरम्भ हुए।

इन सभी से यह अनुमानित होता है कि पूर्व ऐतिहासिक युग में भी बिहार मानव सभ्यता के विकास के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में रहा है।

- बिहार में ऐतिहासिक युग का आरंभ उत्तर वैदिक काल से जुड़ा हुआ है।

- आर्यों के पूर्वी भारत में विस्तार और गांव के घाटी के क्षेत्र में द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया में बिहार का विशेष महत्व रहा है।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के उद्गम स्रोत के रूप में बिहार ने संसार को शांति एवं अहिंसा का संदेश दिया है।
- इसी क्षेत्र से विशाल साम्राज्य की उत्पत्ति की प्रक्रिया भारतीय उपमहाद्वीप में आरंभ हुई है ।
- नंद शासकों द्वारा प्रस्तुति पर मौर्यों ने एक कुशल केंद्रीकृत शासन प्रणाली का निर्माण यहां किया ।
- सम्राट अशोक ने पहली बार एक कल्याणकारी राज्य का आदर्श प्रस्तुत किया।
- गुप्त काल में यह क्षेत्र विद्या साहित्य और विज्ञान की अद्भुत प्रगति का साक्षी रहा है।
- पाल शासकों ने इसे बौद्ध विद्या का प्रसिद्ध केंद्र बनाया जिसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रही । चित्रकला एवं मूर्तिकला की अनूठी प्रगति भी इस युग की विशेषता है।
- मध्यकालीन बिहार मुगल सत्ता के विरुद्ध अफगानों की चुनौती का केंद्र रहा।
- महान अफगान शासक शेरशाह की कर्मभूमि बिहार में ही थी ।
- 17 वी शताब्दी में मुगलों के अधीन विकसित अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक समृद्धि केंद्र बिहार था।
- बिहार में ही सिक्खो के 10वीं और अंतिम गुरु श्री गोविंद सिंह जी का जन्म हुआ
- आधुनिक काल में बंगाल एवं बिहार भारत में ब्रिटिश सत्ता के उदय का आरंभिक केंद्र रहे हैं। ब्रिटिश सत्ता के विकास के क्रम में बक्सर का निर्णायक युद्ध बिहार में ही लड़ा गया था।
- ब्रिटिश सत्ता को पहली सशक्त चुनौती देने वाला जन आंदोलन बहावी आंदोलन बिहार में ही संगठित हुआ।
- 1857 में बिहार के बाबू कुमार सिंह और पीर अली जैसे देशभक्तों ने ब्रिटिश सत्ता को ललकारा।
- गांधीजी ने बिहार के चंपारण में पहली बार सत्याग्रह का सफल प्रयोग भारत में जन आंदोलन के हथियार के रूप में 1917 में किया था।
- स्वतंत्र भारत का प्रथम राष्ट्रपति बिहार की भूमि ने प्रदान किया और लोकनायक जयप्रकाश नारायण की "संपूर्ण क्रांति" की कल्पना इसी क्षेत्र में व्यापक जन आंदोलन का प्रेरणा स्रोत रही।
- वर्तमान समय में बिहार सामाजिक न्याय सांप्रदायिक सद्भाव और समावेशी विकास का एक उदाहरण प्रस्तुत कर रही है।

बिहार के इतिहास के अध्ययन संबंधी स्रोत

बिहार के इतिहास के अध्ययन संबंधी स्रोत निम्नलिखित है-

पुरातात्विक स्रोत

- पूर्व ऐतिहासिक युग के लिए मुंगेर, चिरांद (सारण), चेचर (वैशाली), सोनपुर (सारण) एवं मनेर (पटना) से ताम्र प्रस्तर युगीन वस्तुओं और मृदभांड प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन काल के लिए मौर्यकालीन अभिलेख, लौरिया- नंदनगढ़, लौरिया- अरेराज, रामपुरवा आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं, इस क्षेत्र में काफी मात्रा में सिक्के भी मिले हैं जिनमें आरंभिक आहत सिक्कों से गुप्त कालीन सिक्के तक शामिल है। राजगीर नालंदा पाटलिपुत्र और बाराबर पहाड़ियों में स्थित प्रमुख स्मारक भी पुरातात्विक स्रोतों के महत्वपूर्ण उदाहरण है।

साहित्य स्रोत

- साहित्यिक रचनाओं में आठवीं शताब्दी के ईसा पूर्व में रचित शतपथ ब्राह्मण परवर्ती काल के विभिन्न पुराण का रामायण और महाभारत, बौद्ध रचनाओं में अंगुत्तर निकाय, दीघनिकाय, विनय पिटक, जैन रचना भगवती सूत्र आदि धार्मिक रचनाएं, विदेशी यात्रियों मेगास्थनीज, फाह्यान, ईतिसिंग और युआन च्वागं के वृतांत, कौटिल्य की रचना अर्थशास्त्र और गुप्तकालीन साहित्यिक रचनाएं भी बिहार के प्राचीन इतिहास की जानकारी प्राप्त करने में सहायक है।
- मध्यकाल के लिए मिन्हाज की तबकाते नासिरी, इखत्सान देहलवी की बसातीनुल उन्स, शेख कबीर की अफसाना ए शाहाँ, अब्बास सर्वानी की तारीखे

की वार्षिक आय वाला काशी का प्रान्त भी मिल गया । वैशाली के लिच्छवी राजा चेटक की पुत्री चेलना से विवाह कर इसने लिच्छवियों की मित्रता भी प्राप्त कर ली। लिच्छवी राज्य इस समय के सर्वाधिक शक्तिशाली गणराज्यों में से एक था। बिम्बिसार ने तीसरा विवाह मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा के साथ किया। इस वैवाहिक सम्बन्ध के बाद मगध के प्रभाव क्षेत्र में और विस्तार हो गया। अवन्ति के शक्शिाली शासक चण्डमहासेन प्रद्योत की बीमारी के अवसर पर उसके इलाज के लिए अपने राजवैद्य जीवक को भेजकर बिम्बिसार ने सफल कूटनीतिज्ञ होने का प्रमाण प्रस्तुत किया।

मगध में बिम्बिसार के द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य :

- इन वैवाहिक सम्बन्धों और शक्शिाली पड़ोसी राज्यों की सद्भावना के कारण मगध की शक्ति में काफी वृद्धि हुई और इसे अपने राज्य का विस्तार करने में सफलता प्राप्त हुई।
- इसके साथ-साथ उसने राज्य विस्तार के लिए सेना का भी प्रयोग किया। उसने अंग के राजा ब्रह्मदत्त को पराजित कर अंग को मगध राज्य में सम्मिलित कर लिया। अब मगध राज्य की सीमा पूर्व में अंग से पश्चिम में काशी तक विस्तृत हो गयी।
- राज्य विस्तार के साथ-साथ बिम्बिसार ने मगध में संगठित और सुदृढ़ शासन की नींव डाली।
- उसने सड़कों और नहरों का निर्माण कराया, विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति की और नियमित रूप से लगान वसूल करने की व्यवस्था की, जो उसकी आर्थिक और सैनिक शक्ति का आधार बना।
- इस प्रकार जब 51 वर्षों के शासन के बाद 403 ई. पू. में बिम्बिसार की मृत्यु हुई तब मगध एक शक्तिशाली राज्य के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका था।

अजातशत्रु-

बिम्बिसार की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अजातशत्रु मगध का शासक बना। उसके बचपन का नाम कुणीक था। पिता के शासनकाल में वह अंग का प्रान्तपति रह चुका था, अतः उसे शासन कार्य का अच्छा अनुभव था। बिम्बिसार की मृत्यु के कुछ ही समय बाद कोशल देवी की मृत्यु हो गयी। कोशल नरेश प्रसेनजित ने कोशल देवी की मृत्यु के लिए अजातशत्रु को ही जिम्मेदार माना और उसने अजातशत्रु से काशी वापस ले लिया। अजातशत्रु में एक अच्छे सेनानी के गुण तो अवश्य थे लेकिन वह अपने पिता के समान एक सफल कूटनीतिज्ञ नहीं था। प्रसेनजित द्वारा काशी वापस लिये जाने के बाद वह बौखला उठा और उसने कोशल राज्य पर आक्रमण कर दिया। दोनों राज्यों के बीच काफी समय तक युद्ध चला। अन्त में कोशल नरेश प्रसेनजित ने अजातशत्रु के साथ संधि कर ली, जिसके द्वारा अजातशत्रु को प्रसेनजित ने न केवल काशी प्रान्त ही दिया बल्कि अपनी पुत्री वजिरा का विवाह भी उससे कर दिया। लिच्छवियों के साथ मगध के संघर्ष का प्रमुख कारण मगध की प्रसार नीति था। लिच्छवी गणराज्य पर मगध के प्रभुत्व की स्थापना के उद्देश्य से अजातशत्रु ने गंगा के किनारे पाटलिग्राम में एक दुर्ग का निर्माण करवाया था। पूरी तैयारी करने के बाद उसने वैशाली पर आक्रमण कर दिया। यह संघर्ष 16 वर्षों तक चला। उसने अपने मंत्री बस्सकार को बज्जि संघ में फूट डालने के लिए वैशाली भेजा। बस्सकार को काफी मशक्कत के बाद कामयाबी मिली और अन्ततः लम्बे संघर्ष के बाद अजातशत्रु को सफलता मिली।

इस प्रकार अंग विजय, काशी प्राप्ति के पश्चात् वैशाली विजय के रूप में मगध ने साम्राज्यवाद की ओर तीसरा कदम उठाया।

अजातशत्रु ने लिच्छवियों का दमन करने के उपरान्त पश्चिम के मल्ल संघों को भी परास्त किया और अपने साम्राज्य की सीमा का विस्तार हिमालय की तलहट्टी तक कर दिया। अजातशत्रु जिस समय लिच्छवियों के साथ संघर्षरत था, उसी दौरान अवन्ति के राजा चण्डप्रधीत ने मगध पर आक्रमण की तैयारी की थी। इस संकट की घड़ी में भी अजातशत्रु ने अपने राज्य की पश्चिमी सीमाओं की मजबूत सुरक्षा का प्रबंध किया, फलतः अवन्ति नरेश मगध पर आक्रमण करने की हिम्मत न जुटा सका।

उदायिन

प्रसिद्ध ग्रंथ दीपवंश से ज्ञात होता है कि अजातशत्रु के बाद 462 ई. पू. में उदायिन मगध का राजा बना। अपने पिता अजातशत्रु के शासनकाल में वह चम्पा का राज्यपाल था। उदायिन ने व्यापारिक और सामरिक महत्त्व के मद्देनजर गंगा और सोन नदी के संगम पर **पाटलिपुत्र नगर** बसाया और उसे

इंगलिस की अंग्रेज सेना से हुआ। इस संघर्ष में विद्रोही पराजित हुए। माधव पाण्डेय तो भागने में सफल रहा पर जयमंगल पाण्डेय को गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें फाँसी की सजा दी गई। कुछ समय तक विश्वनाथ शाही भागते रहे पर मार्च 1858 में उन्हें लोहरदग्गा के ककराज में पकड़ लिया गया। 16 अप्रैल 1858 को उन्हें राँची के आयुक्त परिसर के उत्तरी छोर में स्थित पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी गयी।

- **सिंहभूम और पलामू** में विद्रोह अभी भी जारी था। पोरहत के राजा अर्जुन सिंह के नेतृत्व में सिंहभूम में कोलों ने विद्रोह कर दिया। फरवरी 1858 तक अर्जुन सिंह तथा उसके सहयोगी सरदार एवं कोल लगातार अंग्रेज सैन्य टुकड़ियों, उनके नियंत्रण वाले क्षेत्रों और अंग्रेज समर्थकों पर आक्रमण करते रहे। 15 फरवरी 1858 को अर्जुन सिंह को उनके ससुर मयूरध्वज के राजा के घर से गिरफ्तार कर लिया गया और 400 रुपये मासिक पेंशन देकर बनारस भेज दिया गया जहाँ उनकी मृत्यु हो गयी। फिर भी विद्रोह थमा नहीं, रघू और श्यामकर्ण के नेतृत्व में कोल पूरे 1858 ई. में अंग्रेजों को परेशान करते रहे।
- पलामू में विद्रोह ने खतरनाक मोड़ ले लिया था। नीलाम्बर शाही और पीताम्बर शाही ने भोगता, चेर और खरवार जाति को संगठित कर एक दल बनाया। इस दल ने 21 अक्टूबर 1857 को चैनपुर पर आक्रमण कर दिया। शाहपुर पहुँचकर विद्रोहियों ने राजा चूड़ामणि की रानी की चार बन्दूकें जब्त कर ली और स्थानीय पुलिस थाने पर कब्जा कर लिया। नवम्बर 1857 में इन्होंने राजहंस स्थित कोयला कम्पनी के अंग्रेज अधिकारियों के बंगलों पर हमला कर उसे काफी क्षति पहुँचाई। 2 दिसम्बर को मनका और छतरपुर का थाना विप्लवियों का निशाना बना। पलामू का किला भी विद्रोहियों के कब्जे में था। 21 जनवरी 1859 को कप्तान डाल्टन और लेफ्टिनेन्ट ग्राहम के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने पलामू के किले पर आक्रमण कर दिया। कड़े संघर्ष के बाद अंग्रेजों को विद्रोहियों को तितर-बितर करने में सफलता मिली। अंग्रेजों को किले में नीलाम्बर, पीताम्बर और नकलौत माँझी के नाम अमर सिंह के कई पत्र मिले जिससे प्रमाणित होता है कि बिहार के विभिन्न भागों के विप्लवी एक होकर अंग्रेजों से देश को मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील थे। 1859 ई. के अन्त तक इस विद्रोह को पूरी तरह दबा दिया गया। नीलाम्बर शाही और पीताम्बर शाही अंग्रेजों की गिरफ्त में आ गये और उन्हें फाँसी दे दी गई।

निष्कर्ष

ब्रिटिश साम्राज्यवादी ताकतों ने 1859 ई. के अन्त तक बिहार के साथ-साथ भारतवर्ष में विद्रोह का दमन कर शांति व्यवस्था को स्थापित कर दिया। यह विद्रोह सैनिकों ने शुरू किया था किन्तु प्रकारान्तर में समाज के सभी वर्गों के लोगों ने कमोवेश धन और बल से सहयोग किया था। यह विद्रोह असफल रहा परन्तु इस विद्रोह के बाद भारत में कम्पनी शासन का अन्त हो गया। अब भारत ब्रिटिश सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में आ गया जिसके दूरगामी परिणाम हुए।

बिहार और राष्ट्रीय आन्दोलन

बिहार का इतिहास गौरवशाली रहा है और बिहार के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना किसी न किसी रूप में हमेशा विद्यमान रही है। प्राचीन काल से ही बिहार सामाजिक और धार्मिक चेतना के साथ-साथ राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु रहा है। भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के साथ ही इससे मुक्ति पाने के लिए किये गये प्रयासों में बिहार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 1765 ई. में मुगल बादशाह शाह आलम ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा की दीवानी अधिकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सौंप दिया। इससे बिहार के राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक , जीवन में परिवर्तन आया। बिहारवासी इन परिवर्तनों से सामंजस्य नहीं स्थापित कर सके और जगह-जगह विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। इन विद्रोहों में 1781-82 ई. के सुल्तानाबाद की महारानी सर्वेश्वरी का विद्रोह, 1820-21 का हो विद्रोह, 1831-33 का कोल एवं भूमिज विद्रोह और 1855 का संथाल विद्रोह प्रमुख थे। यद्यपि ये प्रारम्भिक विद्रोह स्थानीय असंतोष और समस्याओं के परिणाम थे और इनका उद्देश्य पूर्वकालीन रजवाड़ों, नवाबों और अन्य सामन्ती तत्त्वों के प्रभाव को बहाल करता था, फिर भी इन विरोधों ने विदेशी शासन के विरोध को एक चेतना का विकास किया।

- **1857 का विद्रोह जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है,** में भी बिहार का महत्त्वपूर्ण

योगदान था। यह विद्रोह उत्तरी और मध्य भारत तक फैल गया परन्तु इस क्रान्ति की प्रथम चिंगारी प्रज्वलित करने वाला सिपाही **मंगल पाण्डेय बिहार का ही निवासी था**। जगदीशपुर के जमींदार बाबू **कुँवर सिंह** और उनके छोटे भाई **अमर सिंह** ने इस विद्रोह में अपने पराक्रम का अपूर्व परिचय दिया। यद्यपि इनका प्रयास अन्ततः असफल सिद्ध हुआ, पर इसने बिहारवासियों में राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने में सफलता पाई।

- धार्मिक आन्दोलन होते हुए भी **बहावी आन्दोलन** का मुख्य उद्देश्य भारत को अंग्रेजी सत्ता के चंगुल से मुक्त कराना था। **पटना बहावी आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र था।** इस आन्दोलन से भी बिहार में राष्ट्रीयता के विकास में काफी मदद मिली।
- भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार तथा ब्रह्म समाज और आर्य समाज आन्दोलन ने बिहार में एक वैचारिक क्रान्ति ला दिया।
- 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ बिहारियों की राष्ट्रीय चेतना कुछ और प्रबल हुई। **कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में तो बिहार के किसी प्रतिनिधि ने भाग नहीं लिया** किन्तु 1886 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में बिहार के 31 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।
- 1887 के कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में बिहार के दो प्रतिनिधियों शालिग्राम सिंह और गुरु प्रसाद सेन ने बहस में भाग लिया।
  - शालिग्राम सिंह ने सैन्य सेवा प्रस्ताव के समर्थन में भाषण दिया और गुरु प्रसाद सेन ने लोक व्यय पर एक प्रस्ताव पेश किया।

  तब से बिहार के अधिक से अधिक प्रतिनिधि कांग्रेस के अधिवेशनों में जाने लगे और धीरे-धीरे ब्रिटिश विरोधी आन्दोलनों का माहौल तैयार होने लगा।
- 1908 ई. के कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में बिहार के हसन इमाम, भारतीय कांग्रेस कमिटी के सदस्य के रूप में सम्मिलित हुए।
- 1914 ई. में ब्रिटिश सरकार से संवैधानिक सुधार की समस्या पर बात करने के लिए इंग्लैण्ड गये सात सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमण्डल में **दो बिहारी मजहरूल हक और सच्चिदानन्द सिन्हा** भी सम्मिलित थे।
- ब्रिटिश शासन के विरुद्ध **भारत में सत्याग्रह का पहला व्यापक प्रयोग महात्मा गाँधी ने 1917 ई. में बिहार के चम्पारण से ही शुरू किया**।
- तबसे 1947 ई. तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के सभी चरणों में बिहार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

बिहार प्रान्त की अलग माँग एवं पृथक राज्य का गठन

मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात बिहार, बंगाल के नवाब के हाथों चला गया। ब्रिटिश शासन के दौर में भी यह बंगाल का एक उपांग बना रहा। पाश्चात्य शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर बंगालियों ने बिहार के प्रशासन और शिक्षा पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। इससे बिहारी अपनी निरीहता के प्रति चिन्तित होने लगे और उनके मन में बंगाल से अलग होने की बात घर करती चली गयी।

अंग्रेजी शिक्षा से युक्त चन्द मुस्लिम और कायस्थ बुद्धिजीवियों के अभ्युदय के साथ बंगाल से बिहार को अलग करने का विचार प्रकट होने लगा। 7 फरवरी 1876 ई. को मुंगेर से प्रकाशित होने वाले एक पत्र 'मुर्ध ए सुलेमान' में पहली बार बिहार बिहारियों के लिए का नारा बुलन्द किया गया। इसके द्वारा बिहार में सरकारी नौकरियों में बंगालियों के स्थान पर बिहारियों की नियुक्ति की माँग की गयी। अगले ही वर्ष उर्दू पत्र कसीद ने 22 जनवरी 1877 ई. को बिहार को बंगाल से अलग करने की जोरदार वकालत की।

- 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में बिहार के शिक्षित वर्गों द्वारा एक अलग प्रान्त के रूप में बिहार की माँग जोरदार तरीके से की जाने लगी।
- पृथक बिहार प्रान्त आन्दोलन को शुरू करने का श्रेय **सच्चिदानन्द सिन्हा और महेश नारायण** को दिया जाता है। 1889 से 1893 के अपने ब्रिटेन प्रवास और बैरिस्टरी पास कर ब्रिटेन से भारत वापस लौटने के क्रम में हुए कटु अनुभवों ने सच्चिदानन्द सिन्हा को उद्वेलित कर दिया और उन्होंने बिहार को एक स्वतंत्र प्रान्त का दर्जा दिलाने का संकल्प ले लिया। उन्होंने पटना के एक पत्रकार महेश नारायण जो कायस्थ गजट के सम्पादक थे, से इस संदर्भ में विचार-विमर्श किया। महेश नारायण भी बिहारियों के सामाजिक और राजनीतिक जागरण के लिए बिहार को बंगाल से अलग करने के विचार के समर्थक थे । इन दोनों ने नन्दकिशोर लाल और कृष्णा सहाय के सहयोग

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

whatsa pp- 1 https://wa.link/y7qfk6 web.- https://bit.ly/449wOMs

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/y7qfk6

Online order - https://bit.ly/449wOMs

Call करें - 9887809083